।।श्री रसिकेन्द्र विहारिणे नमः।।
।।श्रीमते रामानन्दाचार्याय नमः।।
श्री झूलन विहार पदावली
हिंडोल साल बिलोकि सब अंचल पसारि-पसारि।
लागीं असीसन रामसीतहिं सुख-समाज निहारि।।

।।श्री रसिकेन्द्र विहारिणे नमः।।
।।श्रीमते रामानन्दाचार्याय नमः।।

श्री झूलन विहार पदावली

सम्पादक :

महेश चन्द्र मिश्र

प्रकाशक :

श्री सीताराम सन्देश कार्यालय

श्री लक्ष्मण किला, श्री अयोध्याजी 224 123

फैजाबाद (उत्तर प्रदेश), मो. 9415062831

प्रकाशक :
श्रीलक्ष्मण किला, श्री अयोध्याजी 224 123
फैजाबाद (उत्तर प्रदेश)
मो. 9415062831

संशोधित एवं परिवर्धित
छठाँ संस्करण

सम्पादक:
महेश चन्द्र मिश्र
9838893001

मूल्य : 25 रुपये

झूलनोत्सव 2011

टंकण :
वीके कम्प्यूटर्स
फैजाबाद

भूमिका

प्रभु श्रीसीताराम जी महाराज की अमृतस्यन्दिनी लीलाओं का अनुस्मरण उपासकों का प्राण है। समैया-उत्सवों के माध्यम से अपने प्राणधन की सन्निधि का अनुभव इन आयोजनों का सुफल है।

श्री अग्र स्वामी जी, श्रीयुगलप्रिया शरण जी महाराज , स्वामी श्री युगलानन्य शरण जी तथा श्री सिया अली जी प्रभृति रसिकाचार्यो के पद झूलन बिहार पदावली के माध्यम से प्रस्तुत हैं। अपने आराध्य की अहर्निश सेवा का अनुष्ठान और उनकी प्रसन्नता को परम प्राप्य मानना रसिकजनों का स्वधर्म है। सखी जनों के साथ श्री युगल सरकार का झूलन विहार अलियों के लिये ही आस्वाद्य है। सामान्य संसार बुद्धि से पीड़ित जन के लिये यह अगम है। श्री रसिक अली जी महाराज की वाणी है-

यह ललित लीला लाल सिय की त्रिगुनमाया पार।
पुरुष तहँ पहुँचे नहीं केवल अली अधिकार।।

आचार्य कृपा से प्राप्त उपासना की इस अलौकिक रीति से श्री युगल सरकार की सेवा में सर्वतोभावेन अपने को सौंपकर साधक लोक बाधाओं से निवृत्त हो जाता है। भगवान की अर्चना में आचार्य प्रणीत पदों का गान महत्त्वपूर्ण अंग है। सन्त भक्त इससे लाभान्वित हों यही पदावली प्रकाशन का उद्देश्य है।

छठे संस्करण का संपादन संशोधन श्री महेश जी ने मनोयोग पूर्वक किया है। इसमें परिशिष्ट के पद सामान्य क्रम में कर दिये गये हैं। प्रयास किया गया है कि पाठ अधिकतम शुद्ध हो। ग्रन्थों के प्रकाशन में कुछ व्यतिक्रम रहा है, श्री युगल सरकार की कृपा से शीघ्र ही अन्य साहित्य-सामग्री भी वैष्णवों जनों के सम्मुख होगी इसी मंगलाशासन के साथ -

मैथली रमण शरण

श्री लक्ष्मण किला, अयोध्या

अवध-अवधि निरवधि की, अवधि निरवधि की सरि नेह सुजोर।
मरुवा अमन मन मानिक अमन मन मानिक, सुठि नेह सुडोर।।
पटरी प्रतीति सुप्रीति की प्रतीति सुप्रीति की, तेहि बिच गुरु मोर।
हिय गगन श्यामघन बरसै श्यामघन बरसै, नाचै मन मोर।।
प्रेमा परा अलि अवली परा अली अवली, गावैं सुजस अथोर।
'श्रीयुगलबिहारिणी' के प्रभु, बिहारिणी के प्रभु, भव बंधन छोर।।

पद-१४१

आज श्री सद्गुरु मोरे झूलन पै बैठे झूलते।
देखि दासों के हियो पंकज कली से फूलते।।
रस रसिक श्री जानकीवर लेत रस-रस रसहिं को।
देत भक्ति सु प्रेम रस जेहि पाय जन जग भूलते।।
नेह-नेह सु बरसाते सुख बरसाते सालो सु हिय।
पद परसते छवि दरसते त्रयताप जेहि निरमूलते।।
सम दमादि विज्ञान ध्यान अमानतादिक गुण महा।
गंभीर धीर सु सिंधु पर उपमा न कहुँ कोउ तूलते।।
बोलनि हँसनि चितवनि चखनि जनमन रखनि रुचि सुचि सदा।
चित बसत 'युगलविहारिणी' नित स्वामि कबहुँ न भूलते।।

पद-१४२

झुलन बिच विलसत श्री गुरुदेव।

ललित अलाप निरत मधुरे स्वर सुर नर किन्नर सेव।।
नाना भाँति निभृत भूपावलि चमकत चन्द्रकलेव।
'रामवल्लभाशरण' एक मुख उपमा कहत लजेव।।

पद-१४३

चलि देखिये मनिकूट पै सखि आज सुख की लूट है।
ललि लाल अलि भलि वृन्द लै अवली सु जुटै जूट है।।
तर तरुन श्याम तमाल पिय सिय प्रीतिलता वितान में।
झूलन प्रिया प्रीतम निरखि अतिबदन रति पद छूट है।
यह युगल विमल विहार श्रीगुरु प्यारप्रद सद सदन पर।
चहुँओर रसिक चकोर माते पिवैं छवि रस घूँट है।

पद-१४४

सिय प्यारी अति सुकुमारी पिया के सँग झूलैं हो।। हरित मणिन के खम्भ दम्भ हर हरित डोर रेशम जगमग कर, हरित जरीन बिछे पटरी पर हरित अवनि सुखमाकर, सरजूकूलै हो।। हरित चन्द्रिका मुकुट विराजैं, कुण्डल तरिवन हरित सु छाजै, हरित हार हीरन हिय भ्राजैं, निरखि मदन रति लाजै हरित दुकूलैं हों। प्यारी पिय सुखकन्द निहारैं प्यारे प्रिया मुखचन्द निहारैं,'युगलविहारिणी' तन-मन वारैं, एको पल न बिसारैं, दोउ मुद मूलैं हो।।

पद-१४५

झूलैं जानकी सुजानआज हरित लतान।
वर विपिन प्रमोद-मोद तन्यो है वितान।।
दोऊ साजे हरी साज हरी-हरी मुसुकान।
हरी-हरी सखि गावैं हरी-हरी राग तान।।

हरी-हरी दू
हरी-हरी भ
प्रेमप्रभा प्रेम
लखि 'युगल

हिंडोरे
दुहुँ दिशि सखियाँ
विविध वितान लत
अलि अवली गुञ्जि
श्री सिय मोहनि
'युगलविहारिणी' प्र

आयो री सावन सु
सरयू तीर सुखद कुंज
लागी झुलावन।। क
कोउ निरत करन त
उछाह सिंधु की तरंग

श्रीसातगुरु के स
संग लिये मिथिल
देव वधू सब ना
उपमा खोजि-खोजि

हरी-हरी दूब खूब महबूब झलकान।
हरी-हरी भरी सरजू तरंग सुख खान।
प्रेमप्रभा प्रेमलता छटा भयो है मिलान।
लखि 'युगलविहारिणी' को सुख भो महान।।

पद-१४६

हिंडोरे झूलत श्रीजानकी बाग।
दुहुँ दिशि सखियाँ मुदित झुलावैं अँग-अँग भरि अनुराग।।
विविध वितान लतान मनोहर तरु प्रफुल्लित फल लाग।
अलि अवली गुञ्जरित भली विधि रहस बिबस रस पाग।।
श्री सिय मोहनि कुञ्ज मनोहर पूरित प्रेम तड़ाग।
'युगलविहारिणी' प्रभा प्रसारित निरखत जन बड़भाग।।

पद-१४७

आयो री सावन सुहावन पिय प्यारी के हिय सुख छावन। सरयू तीर सुखद कुंज साज साजि झूलन की अलिगन झमकि लागी झुलावन।। कोऊ बजावती मृदंगकोउ उपंग वीण स्वर कोउ निरत करन लागी सावन गावन।। 'युगलविहारिणी' उछाह सिंधु की तरंग सदगुरु कृपा सुचन्द नित लागी बढ़ावन।।

पद-१४८

श्रीसतगुरु के सदनमाँ हो पिया झूलैं झुलनमाँ।
संग लिये मिथिलेश दुलारी श्रीसरयू के कुलनमाँ।।
देव वधू सब नाचहिं गावहिं हरषित बरसैं फुलनमाँ।
उपमा खोजि-खोजि कवि हारे कतहूँ न मिलत तुलनमाँ।।

'कान्तिलता' के जीवन धन दोउ सब सुख के हैं मुलनमाँ।

पद-१४९

सदा झूलो मेरे दिलवर बढ़े उत्साह नया।
जियो युग-युग प्रिया प्रीतम यही है चाह नया।।
लता वितान बन प्रमोद तीर सरयू के,
हिंडोला अति विचित्र मणिनमय तैयार नया।।
अनेक यन्त्र बजाते मृदंग वीणादिक,
अलापती हैं गानकला सजे साज नया।।
यही है चाह सदा नाथ अलि चकोरिन की,
बैठे झूलन पै दिखाते रहो मुखचन्द नया।।
यही अभिलाष 'कान्तिलता' श्री सियाजू की,
बढ़ै अनुदिन सदा सनेह सुख सुहाग नया।।

पद-१५०

सावन समाज साजि राजे पिया प्यारी आज,
सँग में सहेली झूला झमकि झुलावतीं।
चन्द्रमुखी बाला वृन्द नवल सिंगार साजे,
दामिनि प्रभा सी अंग-अंग दरसावती।।
बाँसुरी मुरचंग बीन मंजीरा मृदंग बाजै,
सप्त स्वर माधुरी मल्हार तान गावतीं।
द्रुमन लता नवेली मंजरी वितान छाये,
फूलीं फुलवाई मकरन्द चुमकावतीं।।
डोले रसमाते मन मदन मिलिन्द वृन्द,

गुञ्जत सुहाये
मधुर मयूर क
विहँग अनेक
पिऊ-पिऊ पपी
कोकिला की
शीतल सुगन्धा
सरयू हिलोरैं
भूमि हरियाई
मेंहदी रचाई
घुमड़ घटान
दामिनी लहूकै
मन्द-मन्द गाजै
देवन की बा
पीत पट प्रीतम
प्यारी मन भा
प्रेम रस पागे
दै-दै गलबहिय
लै-लै कै बलैय
सुखमा निहा
सुखमा समान
अँग प्रति कोटि
झूलन विहार

गुञ्जत सुहाये लता लूम-लूम आवतीं।
मधुर मयूर कल कोकिला कपोत कीर,
विहँग अनेक धुनि मुनियाँ सुनावतीं।
पिऊ-पिऊ पपीहा विरहिनी की मारे बान,
कोकिला की कूकैं मानो मदन जगावतीं।।
शीतल सुगन्ध मन्द पवन झकोरे देवैं,
सरयू हिलोरैं दोऊ कूल चली आवतीं।
भूमि हरियाई वीर बहुटी सुहाई मानो,
मेंहदी रचाई रितु शोभा सरसावतीं।।
घुमड़ घटान घन झमकि झलान बूँदैं,
दामिनी लहूकै हूकै हूल सी मचावतीं।
मन्द-मन्द गाजैं घन गगन निशान बाजैं,
देवन की बाला फूलमाला बरसावतीं।
पीत पट प्रीतम ओढ़ावैं मन भावनी को,
प्यारी मन भावनको चून्दरी ओढ़ावतीं।
प्रेम रस पागे अनुरागे अंग-अंग दोउ,
दै-दै गलबहियाँ प्यारी हँसति हँसावतीं।।
लै-लै कै बलैयाँ सखि पैयाँ परैं बार-बार,
सुखमा निहारि मन मुदित सिहावतीं।
सुखमा समान कहूँ उपमा न खोज पाई,
अँग प्रति कोटि काम कामिनी लजावतीं।।
झूलन विहार सुख शेषहूँ न गाय सकै,

'मौन' की कहै को पार शारदा न पावती।

पद-१५१

सावन सुहायो सुख नवल हिंडोलना में,
झूमै मन भावन के सँग मन भावनी।
नवल नवेली राजे नवल श्रृंगार साजे,
बाँसुरी मृदंग बाजे गावें कल ग्रामिनी।।
गाजें घन मंद-मंद पवन झकोरे दै-दै,
अति अनुराग में झुलावें गज गामिनी।
प्यारी घन घोर सुनि पिया से लिपटि जात,
'मौन' घन साँवरी घटा में सोहैं दामिनी।

पद-१५२

दोऊ झूलैं मिलि झूला झुकि झूमि-झूमि।।
शीतल सुगन्ध मन्द पवन झकोर लेत, सुखमा सुहाई स
नन्दिनी हिलोर लेत, घन घुमड़ाई उमड़ाई अमड़ाई, चपला की
चमक आई घूमि-घूमि।। बाग वन बेली तरु कदम तमाल
पुञ्ज, मालती सुहाई मानो मदन बनाई कुञ्ज, फूली फुलवाई
अमड़ाई उमड़ाई मानो, मिलत परस्पर लूमि-लूमि।।
गुञ्जत मिलिन्द रसमाते उनमत्त डोलैं,कोकिला कपोत की
विहँग अनेके बोलैं,दादुर अलापै पिय पपिहा कलापै, रटि-रटि
के मचाई बड़ी धूमि-धूमि।। बिपिन प्रमोद बन दशहूँ दिशा
सौहैं विमल विचित्र अवलोकि मुनिमन मोहैं, शोभा अधिकाई
बीरबहुटी सुहाई हरियाई-हरियाई छाई भूमि-भूमि।

सावन समाज
मृदंग बाजैं,बे
गन घूमि-घूमि
किशोरी-किश
'मौन' आनन्द

जच रहे अव
पिया साँवरं
बातैं मधुर
अति रंग भरे
झोंका सरस
चहुँओर से
कोई तान ले
तिरछी नजर
'श्री प्रेमअल

नई रे सावन
नई-नई ड
नई-नई सखि
नई-नई भू
नई-नई चा
नई-नई पु

वती।

ा में,
वनी।
ाजे,
नी।।
दै-दै,
मनी।
जात,
मिनी।

ूमि।।
मा सुहाई सर
ई, चपला की
कदम तमाल
फूली फुलवाई
ूमि-लूमि।।
ा कपोत कीर
लापै, रटि-रटि
दशहूँ दिशान
ोभा अधिकाई
ूमि-भूमि ।।

सावन समाज साजैं सुमुखि सुनैनी राजैं, मंजीर मुचंग बीन मधुर मृदंग बाजैं,बाँसुरी बजावैं गावैं मधुर मलार तान, नचत मोर गन घूमि-घूमि।। कदम की डारी झूला रेशम की डारी डोर, किशोरी-किशोर दोऊ झूलत मचकि जोर, गलभुज दीन्हें 'मौन' आनन्द न थोर, मुसुकाती परस्पर चूमि-चूमि।।

पद-१५३

जय रहे अवधेश ललन मिथिलेशलली की जय रहे।।
पिया साँवरी सोहै घटा सिय दामिनी सी छा रही।
बातैं मधुर रस रहस के आनन्द जल बरषा रहे।।
अति रंग भरे झूलैं दोऊ-दोउ ओर सखियाँ झुलावहीं।
झोंका सरस झूकि झूमि-झूमि भूषण झमाझम बज रहे।।
चहुँओर से नागरि खड़ी बाजे सुमधुर बजावहीं।
कोई तान लेत तरंग सी चातकि मयूर सी ह्वै रही।।
तिरछी नजर हँसि हेरि-हेरि फुलगेंद की चोटैं चहें।
'श्री प्रेमअली' यह चाहती नित नयन में छाये रहें।।

पद-१५४

नई रे सावन नई मेरो साँवरो नई सिया युगलकिशोर।
नई-नई डरिया कदमतार नई-नई रेशम डोर।।
नई-नई सखियाँ झुलावन आई नई झूलें राघो चितचोर।
नई-नई भूषन वसान राजे नई-नई नयान कोर।।
नई-नई चातक भनत वाणी नई-नई दादुर शोर।
नई-नई पुरवा रमकि बहे नई मेघवा घनघोर।।

नई-नई बुँदियाँ परन लागी नई-नई बोलत मोर।
नई-नई सरयू बढ़न लागी नई-नई चित के चकोर।
नई-नई 'रामशरण' दोऊ नई-नई रस में बोर।।

पद-१५५

नए रसिया नई सावन नई सिया नवल हिंडोल।
नई-नई अँग सजि भूषण नये पट नवल निचोल।।
नई-नई गछिया सुमन नई-नई अलिगन डोल।
नई गुंजन स्वर मोहत श्रुति सुनि नई-नई बोल।।
नई-नई त्रिविध बयरिया बहत रमकि चित डोल।
नई-नई चन्द्रवदनि सिय पिय सँग करत कलोल।।
नए घन उमड़त घुमड़त झहरत बुन्द अतोल।
दोउ लपटत गर लागत परसत विहँसि कपोल।।
नई-नई सरयू लहरिया लहरत नव रस घोल।
नई अलि वीणबजावत गाये राग अनमोल।।
मुख नई पानन बिरिया देत हरषि सखि गोल।
नये हिये 'रामशरण' दोऊ निवसहिं रसिक अमोल।।

पद-१५६

झोंकवा न दीजै राघो कमर लचकि जैहैं टुटि जैहैं गरवा के हार रामा।। आइ गयो सावन उमड़ि आये मेघवा बिजुली चमके बहुबार रामा सरयू किनारे प्यारे रच्यो है हिंडोलना झुलवत प्राण अधार रामा। डरपि-डरपि कहें सियशशिबदनी सुनिए तो राजकुमार रामा।। हरे-हरे चहुँदिशि अवनी विराजै

बूँदनपरत फुहार
गुनन के आगार
मानो तो
झूलन की झाँकी
साँवली सूरत पै गे
भूषन वसन राम
सरयू तीर प्रमोद
घनगरजे चमकै
नान्हीं-नान्हीं बुँदि
'रामशरण' दम्प
झूलन की झाँकी
रमकि-रमकि झूले
चलिये तो जाय
पिया-पिया-पिय
चातक कीर
सरयू तीर सघ
हरे-हरे चहुँदि
गलबहियाँ द
'रामशरण' दो

बूँदनपरत फुहार रामा।। 'रामशरण' पिया निठुर भयो कस गुनन के आगार रामा। सिसकि-सिसकि कहैं जनकलड़ैती मानो तो बतियाँ हमार रामा।।

पद-१५७

झूलन की झाँकी अजब बनी है प्यारी सँग झूलैं पियरवा रे।
साँवली सूरत पै गोरी सिया सोहति अँखियन में सोहै कजरवा रे।।
भूषन वसन राम सिय राजत रति अनंग छवि छोरवा रे।
सरयू तीर प्रमोद विपिन में हरि लीन्हों मेरो हियरवा रे।।
घनगरजे चमकै दामिनियाँ सुनि-सुनि बोलत मोरवा रे।
नान्हीं-नान्हीं बुँदिया परत भूमि पर धीरे-धीरे बहत समीरवा रे।।
'रामशरण' दम्पति सुखमा लखि नैनन बहै जलधरवा रे।
झूलन की झाँकी में चित नहिं जाको जनु भूँकत कुकुर सियरवा रे।।

पद-१५८

रमकि-रमकि झूलें नवल हिंडोलना सावन की आई है बहार रामा।
चलिये तो जाय श्रीअवध नगर में, जहाँ लगे मदन बजार रामा।।
पिया-पिया-पिया-पिया रटत पपीहा, मोरवा करत पुकार रामा।
चातक कीर चकोर भणित वाणी झिंगुर झंकार रामा।।
सरयू तीर सघन कुंजन में जुरि आई कदम की डार रामा।
हरे-हरे चहुँदिशि अवनि विराजे बूँदनपरत फुहार रामा।।
गलबहियाँ दीन्हें पियाप्यारी झूलत प्राण अधार रामा।
'रामशरण' दोउ रूप मगन भये निज उर विहरें हमार रामा।।

पद-१५९

सरयू किनारे कदम जुरि छहियाँ रसिया हिंडोला लगौले बा।
सिया पिया रूप माधुरी दरसे कोटि मयंक लजौले बा।।
श्याम अंग झीने पट झलकत जुलफन फुलेल लगौले बा।
राजकुमार सुकुमार छबीले जुवतिन पर जदुआ चलौले बा।
'रामशरण' दोउ रूप रंगीले सावन के मौज देखौले बा।

पद-१६०

गरजत मतंग मतवारे मेघ कारे-कारे दामिनी दमंकत चमंकत। प्रफुलित प्रमोदवन कुंज-कुंज आलीगन हिंडोल साज साजि हिय उमंगत।। पीय प्यारी को रिझावती मृदंग गमकावती झनक झाँझ सनक स्वरताल समंकत। 'मधुपअली' परमानन्द लखि-लखि छवि होत दंग दम्पति रस झूलन झमंकत।।

पद-१६१

सियवर झूलैं झूमि-झूमि।

झम-झम-झम दै-दै झोंक, दै-दै-दै झोंक मृदंग वीणा आदि बाजैं लय सों स्वर सितार। नाचहिं गावहिं अलिगन सरस राग सावन, हरषि निरखि छवि को करति जै-जै जैकार। गरजत घन अति घुमंक बिच-बिच दामिनि दमंक, छाइ रह्यो अमित रंग वन प्रमोदमध्याधार। पिया की रमक प्यारी की ओर प्यारी की रमक पिया की ओर,'मधुपअली' छवि पै जात वारि-वारि।।

पद-१६२

जित देखो तितैं दोऊ झूला झूलें।
श्याम गौर सुखमा अथोर बहु काम बाम उपमा न तूलैं।
साज सावनी सजि मनभावत छवि रबि लखि हियकमल फूलैं।।
दम्पति सुख सम्पति उछाह भरि दिये गलबाँह सु मोद मूलैं।।
अवध स्वामि श्रीसतगुरु सदनहिं अवलोकिय सरयू के कूलैं।
जड़ चेतनहिं ग्रन्थि ग्रन्थित जिय सो ग्रन्थी बिनु श्रमहिं खुलैं।।
निगम नेति करुणा निकेत गुरु शरण किये हिय श्रमहिं शूलैं।
युगल विहार बहार 'मधुपअली' लखी लाल भली भाँति झूलैं।।

पद-१६३

छवि छाई चहुँ धाई ऋतु पावस भली,
झूलैं हेम के हिंडोरा राम जनकलली।
पिय झमकि झुलाई सिय बेसरि हली,
श्रम सीकर सुहाई मुख कमलकली।
जब सिय सिसकानी तब बोली हैं अली।।
झोंका दीजिये सम्हारि सुकुमारी मैथिली।
जब अवध आनन्द लूटो गलिय गली,
'राज' थोरे दिन बाकी ढेर गयो हैं चली।।
('राज' हिय अभिलाष सिय कृपा से फली)

पद-१६४

सियजू झूलि रही बगिया में दशरथ राजकुँवर के संग।।

नख-सिख सजे सिंगार अनूपम लखिछवि लजहिं अनंग।
चहुँदिशि खड़ी नवल ललना गण गावहिं भरी उमंग।।
वीणा वेणु सितार सारंगी, मंजीरा सु मृदंग।।
ताल तमूरा किंकिणि नूपुर बाजि रही मुरचंग।
झोंका देहिं झमकि प्रमुदित मन पट फहरात सुरंग।।
दादुर कीर कोकिला बोले नाचत मोर सुढंग।
रिमझिम-रिमझिम मेहा बरषै चढ़ि रही सरयू तरंग।
सुरतिय निरखि सुमन बहु बरषैं हरषित उड़हिं विहंग।
'प्रेमलता' यह रसिकन सम्पति युग-युग रहे अभंग।

पद-१६५

चलो देखें सिया रघुबीर झुलनमाँ झूलि रहे।
रहि-रहि झोंका देत अली सब उड़त सुरँग रँग चीर।।
झोंकन में अलकैं झुकि झूमत मनहुँ भ्रमर की भीर।
मन मृग 'मोहिनी' को बेधत हैं नैन तीर बेपीर।।

पद-१६६

साजन धीरे-धीरे झूलो प्यारी डरपति है भारी।
अतिशय झोंका देहु न लालन सिया हैं सुकुमारी।।
थहरैं अंग लहरि लट मुख पै फहरैं पट सारी।
'मोहनिअली' विहँसि रघुनन्दन गलबहियाँ डारी।।

पद-१६७

पड़ल हिंडोरा देखो कदम की डारी रामा, हरि-हरि झूलि रहे अवध बिहारी रे हारी।। रहि-रहि झोंका मारैं श्रीजनक

दुलारी रामा, हरि-हरि गावैं सखीजन सुकुमारी रे हरी।
अलकैं बदन पर झूमैं घुँघुरारी रामा, हरि-हरि उदै मानो चंदा घन टारी रे हारी।। 'मोहनी' कहति यह अरजी हमारी रामा, हरि-हरि हियो बसो दोऊ पिय प्यारी रे हारी।।

पद-१६८

आजु तो अवध सैंया झमकि झुलाऊँगी।
मीठी-मीठी तान गाय मन्द-मन्द मुसुकाय,
झोंकन को मारि हिय सुख न समाऊँगी।।
लट सुरझैंहों उरझैंहों मन आपनो री,
कंठ सों लगाय हिय तपनि बुझाऊँगी।।
पान को पवैहों ताको उगलि न पैंहो आली,
'मोहनी' बदन लखि सुख न समाऊँगी।।

पद-१६९

नवल दोऊ झूलत नवल हिंडोर।।
नवल नागरी झमकि पेंग को मारति झुकि झकझोर।
नवल वसन नव तन में राजें नवल सुरंगी छोर।।
नवल कुँज सुन्दर द्रुम छहियाँ नचत नवल बन मोर।
नवल तान नव नवला गावति नवल सप्रेम झकोर।।
नवल दामिनी जनक लड़ैती नव घन अवध किशोर।
'मोहनी' प्रेम छके दोउ झूलन नवल नेह रस बोर।।

पद-१७०

तजु अब मानिनी प्रिय मान।

चलहु झूलन झमकि झूलन मारि पिय दृग सान।
उमड़ि बादर घुमड़ि छायो करत कोकिल गान।।
उतै प्रीतम विवस ठाढ़े कुञ्ज-पुञ्ज लतान।
चौंकि छिन-छिन बाट जोहत लगत मनसिज बान।।
चटक मृदु मुसुकाय सुन्दरि नवल दृग ललचान।
चली नवल निकुञ्ज 'मोहनि' मुरि नवल भुव तान।।
झमकि झोंका मारि झूलन लगी नवल सुजान।
छिटकि नव छवि रही चहुँदिश नवल भुज अरुझान।।

पद-१७१

झूला झूलो मेरी प्यारी वारी जनकदुलारी ना।
सुठि सुकुमारी रूप उजारी राजकुमारी ना।।
चाल गयन्द मन्द बोलनि पिय मन रिझवारी ना।
'मोहनि' झमकि तिहारी झूलनि पै बलिहारी ना।।

पद-१७२

झूला झूलो मेरे प्यारे दशरथ राजदुलारे ना।
सुठि सुकुमारे प्राण अधारे अँखियन तारे ना।।
अलक सुधारे जुलुफन वारे रस मतवारे ना।।
हिय रिझवारे 'मोहनि' प्यारे, दग रतनारे ना।

पद-१७३

झूलत दोउ रसिया आलस माते।
कहुँ सिय पिय पर कहुँ पिय सिय पर झुकि उठि पुनि मुसकाते।
तोड़त बदन लेत अँगड़ाई छनहीं छन जमुहाते।।

पिय कच सिय श्रुति फूलन अँटके हँसि-हँसि दोउ सुरझाते।।
प्रेमालस में छवे छबीले गलबहियाँ लपटाते।
'मधुरलता' ते धन्य धरातल जे यह छवि हिय ध्याते।।

पद-१७४

झूलत झकझोरत निडर पिया।
सावन प्रथम अवधपुर झूलन प्रभु सयान लरिका हैं सिया।
लम्बी-लम्बी पेंग झूलो जनि रघुबर हम डरपति तुम निडर जिया।।
प्रभु मुसुकात निहारि सखिन तन ये हारी हम जीत लिया।
'मधुरलता' दूसर सावन लौं प्रभु हरिहौ तब हँसेगीं सिया।।

पद-१७५

झूलन आई रंग हिंडोरे वे जनककिशोरी संग वाम।
सरयू तीर सुखद प्रमोद वन रंगमहल छविधाम।।
सुखमा सील सनेह भरी गावति झूलन गुनग्राम।
युगलप्रिया दंपति छवि निरखत मुर्छित भये रति काम।।

पद-१७६

सरयू कूल झमकि दोउ झूलें।
अलकें आइ रहीं मुख ऊपर हुमकि-हुमकि दोउ हूलें।।
दोउ मुखचन्द्र चकोर होइ दोउ निरखि-निरखि दोउ झूलें।
हँसि-हँसि पेंग बढ़ावत दोऊ श्याम गौर सुखमूलें।।
नई-नई केलि करत झूलन पर रसिकन मन अनुकूलें।
यह 'रसमोद' अनूपम अद्भुत इन सम और न तूलें।।

पद-१७७

झूलत प्यारे राजदुलारे झमकि झुलावत गोरी गुजरिया।
आज हिंडोरे झूलत सिय पिय रिमझिम बरसत कारी बदरिया।।
परत फुहार पीत पट भीजत जनकललीजू की सुरँग चुनरिया।
क्रीट मुकुट लट कुँवरि सँवारत चिकुरचन्द्रिका पिय मन हरिया।।
रमकि झमकि पिय पेंग बढ़ावत झुकि-झुकि जात कदम की डरिया
श्रीजनकलली सरयू जल परसत नभ से होत सुमन की झरिया।।
कबहुँ झमकि पिय सिय को झुलावत गावत मोदभरि राग कजरिया।
'रस' वरसत जब करत चपल दृग सखि छवि लखि जावें बलिहरिया।।

पद-१७८

तनिक धीरे झूलो हो बाँके यार।।
तुम तो अपनो सुख चाहत हो दलकत हृदय हमार।
हम नाजुक तुम प्रबल कठिन हो ताते कछु न विचार।।
तुम तो अपने सुख विहवल हो प्रबल मदन के धार।
सुनि प्रीतम लिपटाय हृदय लगि 'रस' बस तन न सम्हार।।

पद-१७९

लसत दोउ श्यामा श्याम हिंडोर।
विद्युत छटा छनहिं छन छहरति छिति छावति छवि छोर।।
श्याम रंग रस बोर डोर कल झूलत श्यामल गोर।
श्याम घटा घनघोर मोर पिक शोर करत अति जोर।।
श्याम तमाल लता नव कुंजन झूमि झुकी चहुँ ओर।

सुरन हरसि बरसत कुसुमांजलि 'मधुरी' मोद न थोर।।

पद-१८०

झाँकी झलामल झमकै झूलत झकझोर।
अलियाँ झुलावैं झोकैं झुलावैं झोकैं, झमकत चहुँओर।
झीनी झरैं घनवारी, झरैं घनवारी, हरषैं मन मोर।
'मधुरी' सुझुकि झुकि झाँकैं, सुझुकि झुकि झाँकैं, छवि पर तृणतोर।।

पद-१८१

प्यारी पिया सँग झूलैं, उनये घनघोर।।
डारे गरे दोउ बहियाँ गरे दोउ बहियाँ, झोंकत झकझोर।
सखियाँ झुलावैं गावैं झुलावैं गावैं, बिच-बिच बोलें मोर।।
झोंकन चलत पुरवैया चलत पुरवैया, फहरत पट छोर।
युवती झरोखन लागी झरोखन लागी श्रीकर तृण तोर।।

पद-१८२

दुलहिनि सँग दूलह झूलि रहे।।
मौरी मौर सुभग सिर धारे नव जीवन दोउ उमँग गहे।
ग्रथित चूनरी पीत उपरना कर कंकन छवि अधिक लहे।
नासामणि अधरन पर हलरत मंद हँसनि दृग चहनि चहे।
कर पंकज पद मेंहदी जावक अनुपम शोभा कौन कहे।।
ब्याह-विधान कराइ सहेलिन गावति मंगल तालन दे।
'प्रेममोद' सब ऋतु की लीला रासमण्डल मधि नित्य बहे।।

पद-१८३

झूलन पर अरुझि गये पिय प्यारी।

भूषण से भूषण पट-पट से श्याम गौर मनहारी।।
जंघा जानु उरू कटि-कटि से नवल अंग छवि भारी।
उर-उर से मुख-मुखनि मिलाये भुज ते भुज अँकवारी।।
तन मनप्राण जीव एक कीन्हें प्रीति सुरीति अपारी।।
'प्रेममोद' यह अनुपम अरुझनि निरखत अलिन सुखारी।।

पद-१८४

सरयू कूले बना रहे सावन।
पिय प्यारी नित झूला झूलैं अलिगन झमकि झुलावन।।
घन गरजनि चमकनि दामिनियाँ मोरवा बोल सुनावन।
बाजहिं वीण मृदंग मुरलिका राग रागिनी गावन।।
छत्र फिरावन व्यजन चलावन दुहुँदिशि चँवर ढुरावन।
मन्द हँसनि चितवनि रस बोलनि नैनन सैन चलावन।।
अतर पान माला की पहिरन अरस परस मन भावन।।
भूषण वसन अंग अरुझावन रसिकन हिय सुख छावन।
'प्रेममोद' तृण तोरि असीसत राई लोन उतारन।।

पद-१८५

सात स्वरों की सतरँग चुनरी ओढ़ी मैने आज रे।
धन्य भई मैं कजरी गाऊँ ले के सुन्दर साज रे।।
लखन किला में झूला झूलें देवों के सरताज रे।
एक ओर बनी है झाँकी श्री बड़े महाराज की।
दूजी ओर सोहैं झूलन में श्रीपण्डित जी महाराज।।
झुलावैं प्यार भरी अलीगन सहित समाज रे।
गायक मध्य विराजें श्रीकिलाधीश महाराज।
जिनके गायन पर न्यौछावर तीन लोक के साज रे।

मधुरलता क

अरे रामा रि
घिरि आये
अरे रामा चम
गरे सोहैं मणि
दोउ झूलैं
अरे रामा मन्द
हो 'मस्त' हि

मोरा छ
झोंका
अब
बहु
जनि
हिय
पैयाँ
तुम
विनत

सज
छब

मधुरलता की कला के ऊपर चिति सुन्दरी को है नाज रे।।

पद-१८६

अरे रामा रिमझिम बरसे पनियाँ झूले राजा रनियाँ रे हरी।
घिरि आये घुमड़ि घनकारे, परैं रिमझिम बूँद फुहार,
अरे रामा चमकि रही दामिनियाँ ।। अँग-अँग में भूषण निराला,
गरे सोहैं मणिन की माला, अरे रामा कमर पड़ी करधनियाँ।,
दोउ झूलैं सुरँग हिंडोला, बिन दाम लेत मन मोला।
अरे रामा मन्द-मन्द मुसुकनियाँ।। गलबहियाँ दिये दोऊ झूलैं,
हो 'मस्त' हिये दोऊ फूलैं, अरे रामा भूलैं नहीं चितवनियाँ।

पद-१८७

मोरा छाँड़ि दे अँचरवा मैं तो न्यारी झूलूँगी।।
झोंका दीन्हीं अति भारी फारी साड़ी जरतारी,
अब बातों में तिहारी मैं तो नाहीं भूलूँगी।।
बहु भूषण हमारे गिरे टूटे नग सारे,
जनि छेड़ो छलकारे तोसे नाहीं बोलूँगी।।
हिय काँपत हमार जिमि तरुवर डार,
पैयाँ लागू बार-बार मुख नाहीं खोलूँगी।
तुम गावो लैके बीन कोउ पावस नवीन,
विनती करो ह्वै के 'दीन' तब साथे झूलूँगी।

पद-१८८

सजन आज झूला झुलाना पड़ेगा,
छबीले छली छल भुलाना पड़ेगा।।

किया हैरान था मुझको जो फागुन के महीने में,
कसर सारी गिन-गिन चुकाना पड़ेगा।
उतरकर आप झूले से खड़े हो जाइये साहब,
कानूनन न हीलों बहाना चलेगा।
गहो डोर रेशम कमल कर में प्रीतम,
रसीली सिया को झुलाना पड़ेगा।
बढ़े पेंग लम्बी भूलकर न हरगिज,
रसे-रस रसिकबर झुलाना पड़ेगा।
खता माफ चाहो तो जुरमाना यह है,
सिया के चरण सिर झुकाना पड़ेगा।
कियो सोई प्रीतम रसीले रसिकमणि,
'मोद' स्वामिनी को कण्ठ लगाना पड़ेगा।

पद-१८९

झमकि झूलब बालम तो संगे हिंडोरना।।
विपिन प्रमोद महँ नित बोले मोरना।
ताहू पै उमड़ि आवै सरयू हिलोरना।।
सिय मुख लखि पिय नयन भे चकोरना।
झोंका न सम्हारि सके मति भई भोर ना।।
'युगलसहचरी' लखि छवि छकी जकी।
झुलवहुँ पिया हँसि हरि दृग कोर ना।।

पद-१९०

हिंडोरे झूलत दोउ सरकार।।

श्री मिथिलेशलली सँग राजत श्री अवधेश कुमार।
दामिनि लरजि गरजि घन बरसत रिमझिम परत फुहार।
झुकि-झुकि लाल लली मुख निरखत मानत मोद अपार।
मानहु अरुण 'बिन्दु' पंकज पर भ्रमर भ्रमत बहु वार।

पद-१९१

सिया साजन का री बाँका झूला।

मोतियनहार वन्दनवार हीरे हजार की कतार,बार-बार छवि निहार,रतिपति निज मद भूला।। चम्पा चमेलि मोतियन बेलि जूहि अकेलि छवि सकेलि, झेलि मेलि करत केलि, फूला की महक से फूला।। तापै विराजे अवध राज जनकजा समेत आज लोक लाज त्यागि सुजन छवि हरण त्रिविध शूला।। अरुण वरण मंगल करन दोउ पिया प्यारी के चरण शरण 'बिन्दु' संतन की सोई जीवन धन मूला।।

पद-१९२

भीजत कुञ्जन में दोउ अटके।

प्रिय पाहुने भये विटपन के पावन सरयू तट के।
पवन झकोर लली मुख मोरति छिपति छोर पिय पट के।।
युगल स्वरूप अनूप छटा लखि रति मनोज मन भटके।
इक टक छवि रस 'बिंदु' पियत दृग पल भर हटत न हटके।।

पद-१९३

दोउ जन लेत लतन की ओटैं।

कछु पुरवाई चलत घन गरजत कछु बूँदन की चोटैं।

डरपति सिय पट छाँह करत पिय बाँधि भुजन की कोटैं।
उत फहरत पचरंगी पगिया इत चूनर की गोटैं।
यह छवि लख दृग 'बिन्दु' प्रिया प्रीतम के पाँय पलोटैं।।

पद-१९४

दौरि दौरि आवै बादर सरजू की कुञ्ज माँही रे। झोंका दै रँगीली सखियाँ सावन झुलावें हो। श्याम गौर अंग मिलि झूले एक संग दूजो घन दामिनि निरखि छवि पावैं हो। कानन कुण्डल जरे अंगनि भूषण भरे चंद्रिका किरीट मनभावें हो। नूपुर पगनि शोभा काम कोटि मन-लोभा युगलप्रिया की हिय हरष न समावे हो।।

पद-१९५

झूला झूलो सम्हारि के लालना।
हजार बार कहा आप मानते ही नहीं,
रहम करना गोया आप जानते ही नहीं।
धड़कता है मेरा दिल और आप हँसते हैं,
किसी के पीर को बेपीर क्या समझते हैं।।
कहवैहो निठुर यह चालना।।१।।
भला है अब तो कहा मान लीजिये साहब।
नहीं तो होली में फिर जान लीजिये साबह,
कसर निकालेंगी सखियाँ जय बोलावेंगी,
'शरण' पुकारियेगा आप तब छुड़ावेंगी।।
परि जैहो सखिन के पालना।।२।।

(स्वा
पावस घटा
अरे रामा झु
विलसत व
अरे रामा
नासा वेसर
अरे रामा जि
गति गयन्द
अरे रामा कु
सरस हिंडोल
अरे रामा र
तीन ग्राम स्
अरे रामा
आज
आयो
सजल
मोर
हरित
लाड़िली वे

पद-१९६

(स्वामी श्रीसीतारामशरण जी 'मधुरलता'।)

पावस घटा अटा चढ़ि लखि के बन प्रमोद सोहनियाँ रामा,
अरे रामा झुण्ड-झुण्ड चलीं झूलन को कामिनियाँ रे हरी।।
विलसत वदन अमन्द चन्द पर कारी घूँघरवारी रामा।।
अरे रामा लट लोटै मानो पाली नागिनियाँ रे हरी।
नासा वेसर राग अधर पर लटकन की लटकनियाँ रामा,
अरे रामा जियरा शाले कमर पड़ी करधनियाँ रे हरी।।
गति गयन्द गामिनियाँ छमछम बाजैं पग पैजनियाँ रामा,
अरे रामा कुच नितम्ब के भार लंक लचकनियाँ रे हरी।।
सरस हिंडोल शाल लखि बलि-बलि जाहिं सबै भामिनियाँ रामा,
अरे रामा रस बरसत जब पिय भुज गहि लपटनियाँ रे हरी।।
तीन ग्राम स्वर सप्त अलापहिं 'मधुर' साज बाजनियाँ रामा।।
अरे रामा मानहुँ मूरति धरे फिरे रागिनियाँ रे हरी।।

पद-१९७

आज के बिछुड़े न जाने कब मिलेंगे।
आयेगा सब सुखद सावन रसिक मनहर,
सजल घन रस भरत भरना शीत मृदुतर।।
मोर शोर अथोर दामिनि दमक घन पर,
हरित भूमि लता वितान भरे सरित सर।।
लाड़िली के साथ लालन मधुर झूलन कब झूलेंगे।। आज.।।

आज से फिर दिन गिनेंगे भक्त प्रतिपल,
ब्याह, होली, चैतनौमी आदि उत्सव।।
फूल बँगले की छटा को देखते ही,
मधुर पावस आगमन होगा अवध पर।।
विरह पावक से जले नव कंज मानस तब खिलेंगे।।आ.।।
मास भर सद्गुरुसदन रस रंग बरषा,
तीज की शुभ रात सबका हृदय करषा।
प्रात सरयू तट अघट पर बरसि रसरँग की बहार,
आज भी आँखें समाई है वही झूलन विहार।।
श्री जानकीवर वार बाग में फिर आप जाने कब मिलेंगे।।आ.।।
श्री जानकीवर बाग के नव सुमन लोभी ऐ भ्रमर,
लाड़िली नव अंग सौरभ घ्राणकर हो मत्त प्रियवर,
नित चकोर बने रहो लाडली मुख चन्द का
पानकर युग-युग जिओ श्रीप्रिया कंज मरन्द का।
'मधुर' झूलन ये सदा दृग में झूलेंगे।।आ.।।

पद-१९८

धानी रंगा दे मजेदार मोरा बालम।।
धानी पहिरि पिया तोरे संग झूलब गाउब राग मलार।
गौरांगिनि के मध्य श्याम छवि शोभा अमित अपार।।
हम तुम बालम एक रंग ह्वै विहरब सरयू किनार।
'सियाअली' के यही मनोरथ हो जा गले का हार।।

पद-१९९

झुलावो री सजनी धीरे-धीरे।
ताल मृदंग मजीर सितारे बजाओं री सजनी धीरे-धीरे।
गौड़ मलार राग सोरठ में गवाओ री सजनी धीरे-धीरे।।
नूपुर छमक झमक किंकिणि की नचाओ री सजनी धीरे-धीरे।।
हास विलास केलि कौतुक में रमाओ री सजनी धीरे-धीरे।
'सियाअली प्रीतम प्यारी छवि निहारो री सजनी धीरे-धीरे।।

पद-२००

(पं.जानकी रमण शरण जी ' रमण')

मिथिलापुरी सुहावनी, श्रीकमला के कूल।
वन उपवन चहुँ राजहीं, बाग विपुल समतूल।।
वापी कूप सरित सर लखि सुर मुनि मन भूल।
श्रीमिथिलेश महिप-मणि, जनकलली-सुखमूल।।
सुखमूल जनकलली भली भुवनेश्वरी भूनन्दिनी।
श्री जनकजाया मैथिली, अति निर्मली सुरबन्दिनी।।
रानी सुनयना लाड़िली, गुण आगरी सुखकन्दिनी।
रघुबीर प्राण प्रबल्लभा, प्राणेश्वरी सुखचन्दिनी।।१।।
पुर नर नारि निपुण सब, सिय पद प्रीति सुभूरि।
निज-नज धर्म निरत नित, उर शुचि सुमति सुपूरि।।
सिय पिय शुभ यश वरणहिं, बाल तरुण जर जूरि।
वाणी विभव विशद वर, रमत रमा महि धूरि।।

माहि धूरि रमत रमा शारद शची आदिक सर्वदा।
हरिहर विरंचि विलोकि पुर छबि, विगत निज प्रभुता मदा।।
मंगल कलश तोरण पताका युत, सकल मन्दिर मुदा।
मृदु मग सुबीथी, हाट हाटक मणि, रतनमय सम्पदा।।२।।
पावस परम मनोहर, सावन भावन मास।
हरित भरति छिति छाजहीं सुखद सुछबि चहुँपास।
चित्र विचित्र सुमन बहु, कुसुम कदम्ब सुहास।।
सरनि सरोज सुरभि मधु, ललित लता तरु भास।
तरु भास ललित लता तमाल निकुंज गुंजत अलि निकर।।
पाटल सुचम्पक गन्धराज सुमालती मन मुग्धकर।
बरसत घुमड़ि घन सघन श्यामल, बह पवन विद्युत् विखर।।
शुक पिक मयूर चकोर चातक भेक झिंगुर वच सुघर।।३।।
गृह-गृह झूलहिं झूलना ललना सजि श्रृंगार।
चन्द्रवदनि मृगलोचनी सुषमा अंग अपार।।
पिकबयनी स्वर-लापहिं गावहिं राग मलार।
गहि गर भुज हँसि झोंकहिं, उर कटि जानु सम्हार।।
उर जानु ग्रीवा कटि लचकि, झुकि झमकि झूमहिं भामिनी।
श्रम बिन्दु विलसत विधु मुखनि मृदु, मुक्त कुंतल कामिनी।।
नूपुर सुकंकण किंकिणी धुनि श्रुति मधुर रस वर्षिणी।
तन कुसुम चीर, प्रसून माल मनोज मानस कर्षिणी।।४।।
जनक नगर निरखिहिं नभ चढ़ि-चढ़ि विबुध विमान।
बरसहिं सुमन सुअञ्जलि, बजवहिं मुदित निशान।।

किन्नर छकित चकित चित, गत गन्धर्व गुमान।
देव वधू हिय हर्षहिं, करि सिय महिमा गान।।
करि गान सिय महिमा मनावहिं जयति श्री सिय स्वामिनी।
जय जयति जानकि 'रमण' चरण सरोज प्रेम प्रदायिनी।।
त्रिभुवन तिलक तिरहुत विदित, निगमादि वर्णित मेदिनी।
सत्संग अनुभव गम्य रसिकन जीवनी भव भेदिनी।।५।।

पद-२०१

झूले झूलन झमकि छवि निधि लली लाल।
उर उमगि-उमगि झमकत मुद माल।।
भूले भवन भरोस भान जीवन जहान।
फूले लोचन कमल निरखत युग भान।।
खुले सरस सुचित हित हिय हुलसान।
भयो रसिकन हिय जग तिनक समान।।
महा मोद उत्साह सुखनिधि उमगान।
हिय 'युगलअनन्यअली' शौक सरसान।।

पद-२०२

झूलो झमक हिंडोरे दोऊ दृग चित चोर।
महा मोद उमगत तकि सरयू हलोर।।
सखी सरस सलोनी गीत गावें चहुँओर।
रीझि रससिन्धु हेरि नैनन की कोर।।
शुचि शीतल समीर घनघोर मोर शोर।
सुनि सुभग सरोद सचकित काम जोर।।
झोंका अजब अजूब खूब रंग रस बोर।

जोहि 'युगलअनन्यअली' देति तृन तोर।।

पद-२०३

झूलन झमक झमाक की जाहिर जहूर है।
निरखो नजर नवीन से निज नेह नूर है।।
लावन्यलता लोल ललित लाज को तजिके।
लपटी ललित ललाम मधुरतर सरूर है।।
तर तान गान मान भान शान को तजिके।
गावें नवीन नागरी आनन्द पूर है।
रसिकों के हरष हेतु इह सावन सोहावना।।
वरसें विसद बहार सुधा बूँद रूर है।।
जिसका न दिल लगा कभी झूलन के झोंक में।
पण्डित गुनी ज्ञानी सभी सब तौर कूर है।
चपला चमकि-चमकि के चपकती हैं मेह में।
मोहन मनोज मान मथन मुद मयूर है।।
नाचे नवीनी नागरी खुश दिल रहस भरी।
जिनकी छटा घटा को निरखि दंग हूर है।।
बेखुद किया मन मेरा इह झूलन ने क्या कहूँ।
इस सुख बिना 'अनन्य' सभी बात धूर है।।

पद-२०४

(श्री रघुवर शरण जी)

बाँकी झूलनि तिहारी मन मोहैं रे।।
सिया प्यारी अलबेली गलबाँह दिये टेढ़ी पगिया सुभग शिर सोहैं र ।

'रघुवर' प्यारे बड़ी अँखियाँ कटीली तेरी कल न परत बिनु सोहैं रे ।

पद-२०५

(श्री अवध अली जी)

सजनी झूलत श्यामा श्याम।

सरयू तीर प्रमोद वन में राम सिया सुख धाम।।
रतन जटित वर कनक हिंडोला शोभित जग अभिराम।
सावन श्याम घटा झुकि आई जहँ-तहँ दमकत दाम।।
बोलत मोर चकोर कोकिला चातक रटत ललाम।
बजत मृदंग ताल सारंगी सखि गावति गुण ग्राम।।
चन्द्रकला सुभगाजू झुलावत निर्तत सहजा वाम।
'अवधअली' प्रिय प्रीतम छवि पर वारिय रति शतकाम।।

पद-२०६

सदा चिरजीवो रंग भरि जोरी।

सदा विहार करो रंग मन्दिर नित्य किशोर किशोरी।।
सदा सोहागिनी के अनुरागनि, रंगे रहो बड़भाग बढ़ो री।
पिय के प्राण बसो सिय सुन्दरि, सिय मन श्याम बसो री।।
पिय के चाह सुचातक लौं रहे, सियजु की माया स्वाति बरसो रा।
सिय मुखचन्द सुधारस द्रवै नित, प्यारे के नैन चकोरी।।
हमरे नैन प्राण के सरबस आधिक सुख सरसोरी।
'कृपा निवास' उपास महल की टहल लगी सो लगो री।।

पद-२०७

झुलैहों सजना तोको झूला।

झूलत छवि अवलोकि अंग-अँग मनहिं ससोक भुलैहों।।

दम्पति केलि-कला कौतुक लखि हिय कल कमल फुलैहों।
जब प्यारी गरभुज हँसि धरिहैं उपमा कहुँ न तुलैहों।।
चंचल चख चमकाय सुचित हरि निज ढिग मोहि बुलैहों।
जुगल विहार बहार प्यार लहि विनहीं मोल बिकैहों।।

पद-२०८

झूलैं श्रीजानकीवल्लभ रंग हिंडोरना रे।
रंग-पटुली चौकीडारी छतुरी अद्भुत मणि गन तोरना रे।
कञ्चन खंभे जटत रंगमानि मरुवा वेल मोरना रे।
तापर रंग मयूर को रंगन बोलत है चित चोरना रे।।
रंगभरी झूलन पद गावत ललनागन चहुँओरना रे।
युगलप्रिया रसिकन मन उमगत सुनत मृदंग टकोरना रे।।

पद-२०९

सावन सियाराम सँग झूलत रेशम हेम हिंडोर हो।।
सियाजू मिथिला दिशि को झोंकत राम अवध की ओर हो।
अपने-अपने वश राखन को मानो गई लग होर हो।।
वदन विलोक विलोकन वारे बोल उठत बरजोर हो।
सुघर सुधाकर संसृति सुख प्रद सुभग सूर इक ठोर हो।।
झूला झूमि-झूमि पूरब को औ पश्चिम की ओर हो।
छन प्रभात छन संध्या की छवि छाय रहे छिति छोर हो।।
शोभा देखि-देखि दोऊन की नारी नरहं विभोर हो।
विहँसि उठत जिमि साँझ कुमुदिनी खिलत कंज बन भोर हो।।
मधुर मलार की तानैं सुनि आनन्द अथोर हो।।
उठी अलौकिक प्रीति प्रेम की दम्पति हिये हिलोर हो।।
प्रकृति पुरुष तन नील पीत पर जनु बिजुरी घनघोर हो।

दरशन करि नाचन लागत हैं 'बृजनन्दन' बनमोर हो।।

पद-२१०

हरि हरि झाँकी निरखो बाँकी अवधलला की रे हरी।।
थाकी ब्रह्म सभा की मति गति सकुची सब वसुधा की रामा,
हरि हरि, चकित चितव सब ओर कोर नैना की रे हरी।।
एक बार ही ताकी-ताकी मुक्ति होत जिन ताकी रामा,
हरि हरि, ऐसी बाँकी आँख मैंन सम काकी रे हरी।।
पूरण कर मनसा की हारे खोजि खान उपमा की रामा,
हरि हरि, मोंहि लेत चित चितये हँसन लला की रे हरी।।
'मोहनिअली' तिहारी चितवनि चाहति परम कृपा की रामा,
हरि हरि, हिय में विहरैं मूरति रूप सुधा की रे हरी।।

पद-२११

हरि हरि, औचक छैला नैन बान उर मारा रे हरी।।
मन्द-मन्द मुसुका के छलिया जादू मोपै डारा रामा,
हरि हरि, ऐसो जालिम हाय अवध को प्यारा रे हरी।।
भई बेहाल बिसरि गई सुधि बुधि जबहीं नेक निहारा रामा,
हरि-हरि तलफत छोड़ि दृगन ते होइ गयो न्यारा रे हरी।।
'मोहनिअली' बताओ कोऊ मनिहौं यह उपकारा रामा,
हरि-हरि, दरद मिटै नहिं बिनु पिय राजदुलारा रे हरी।।

पद-२१२

झुलन में आज सज धज के युगल सरकार बैठे हैं।
अलिन मन मोहने मानो सुछवि शृंगार बैठे हैं।।

युगल मुखचन्द हेरन को सभी आँखें चकोरी हैं।
परस्पर में प्रिया प्रीतम बने गरहार बैठे हैं।।
मजे से झूलते झूला कभी मचकी भी लेते हैं।
रसीली मैथिली संग में रसिक सरदार बैठे हैं।।
मधुर मुसुकाय सुनते है सरस संगीत सखियों के।
गुणों पै दाद भी देते सजन दिलदार बैठे हैं।
कृपामय नयन कोरों से विहँसि हँसि हेरते दोनों।
'लतारसकान्ति' के हिय के सकल सुख सार बैठे हैं।।

पद-२१३

देखु हे नवेली आली झूलन बहार।
नवल किशोरी संग नवल कुमार।।
नवल कंचन वन नवल हिंडोल।
चातक कोयल कीर नवल सुबोल।।
उमड़ि आयल नव घटा बेसुमार।
चपला चमकि परे नवल फुहार।।
नवला नारिक तहँ नवल जुटान।
नव साज लय गावे नव-नव तान।।
'लतारसकान्ति' फूलि अंग न समाय।
नव सुख पावि लाल लली के झुलाय।।

पद-२१४

नहुँ-नहुँ झुलू पाहुन नवल हिंडोल।
टूटल लली क गरहार अनमोल।।

रतन ज
रिमझि
बोलै
कंठ ल
कजा
'मनमो
गुनि-गु
अब त
अली
अब त
सुरझ
यही झ
झुकि-झ

हमर स्वामिनी छथि बड़ सुकुमारि।
एते जोर झोंका नहीं सकती सम्हारि।।
खसल भूषण सु वसन उधियाय।
डर सँ ललीक मुख कंज कुम्हिलाय।।
किय नै मानै छी पिय रसिक सुजान।
'लतारसकान्ति' क विनय करु कान।।

पद-२१५

झमक दोऊ झूलै रे हिंडोरवा।।
रतन जड़ित शुचि सुभग हिंडोरवा, रेशम रजु छोरवा।
रिमझिम-रिमझिम सावन की बदरिया, से चारो ओरिया बोलै रे बन मोरवा।। हँसनि हँसावनि सयन चलावनि, कंठ लगावनि गरे भुज धरवा। झमकि झुलावैं सखि गावैंलीं कजारिया, निहारैं लागीं आपन री चित चोरवा।।
'मनमोहन' के प्राण सजीवन, सुफल अब भेलै रे दृगकोरवा।

पद-२१६

गुनि-गुनि गनि-गनि दिवस बितैलिये, से दिन आज पूरि गेल।।
अब त बरस भर सरसि तरसि रहवै, सोचि दृग आँसू बहि गेल।
अली सब रुप रस रसिक चकोरी तोर, बिन देखे कल नहिं लेन।।
अब तो अरज एक तोहिसँ हो प्राणधन, अरुझि झुलू एक बेर।
सुरझू जनि पिय अलिन समाज, बिच, रमकहु साँझ सवेर।।
यही झाँकी लय पिय नैनन में झुलिया, अब पिय करियों न देर।
झुकि-झुकि झमकि झुलहु पिया प्यारी हिय दृगि भरि निरखब फेर।

पद-२१७

सिया के सजन के झुलाई लियौ हे सजनी सावन बितल चलि जाय।
सावन समान सुख अनत न पायब जेहिं जोहि जियरा जुड़ाय।।
युगल ललन विहँसन गर लपटन झूलन-झूलन मनकाय।
पान पवावन लट सुरझावन तजि किछु आन न सोहाय।।
झूलन समाज संग सिय पिय हिय बसि विलसहुँ सुरुचि सदाय।
सावन गमन तन राखन के 'कान्तिलता' नहिं किछ अपर उपाय।।

पद-२१८

आरती झूलन की कीजै, मधुर छवि नयनन लखि लीजै। लली लालन राजैं भरि प्यार, सु नख शिख सजे सुभग शृंगार, मदन मद तजै, सूर शशि लजै, डोल छवि छजै बलैया बार-बार लीजै। नींदवश कबहुं-कबहुँ झुक जात, सखिन तनहेरि सकुचि मुसुकात विहँसि जब जोहैं, नयन मन मोहैं, धरै धीर को है, सखिन हिय, प्रेमवारि भीजै।। अरुण अँखियाँ सोहैं अलसात, अँगैठी लै लै के जमुहात, अधिक निशि झूले, प्रेमवश भूले, परम सुख मूले निछावर तन मन करि दीजै।। झलन की झाँकी तजी न जाय, नयनमाँ अधिक-अधिक ललचाय, प्रेम रस रसै, युगल जो लसै उर अन्तर बसै, तबहिं रस 'कान्तिलता' जीजै।।

पद-२१९

सबहिं चलोरी झूला झूलें, श्याम रंग हिंडोर।।

सरयू तीर सुखद मनि महलें अतर गुलाब सुगधंन चहले।
बन प्रमोद चहुँओरे, बोलत कोकिल मोर चकोरे।
कंचन खंभ जड़ाऊ राजै छतरी डाँडी अद्भत भ्राजै पटुली रंग बिरंग विराजै निरखात हीं चित चोरे।।
मंद-मंद मुसुकावत प्यारे प्यारी के अंसन भुजधारे।
'युगलप्रिया' कर सों कर जोरे रतिपति को मद छोरे।।

पद-२२०

सियावर साँवरे छवि देखि।
रहत न तन मन सुधि कछु सजनी लगत न नैन निमेखि।
साजि सिंगार परस्पर दोऊ गलबाहीं वर वेखि।
'युगलप्रिया' अलि चन्द्रकलादिक सुफल सुजीवन लेखि।।

पद-२२१

झूलत सावन कुञ्जन सुरंग हिंडोरे सिय प्यारी संग रंग लाल।
रंग प्रमोदवन रंग घटा बरसत रंग मलार गावति रंग बाल।।
रंग मृदंग बाजे रंग सारंगी साजे रंगमुचंग रंग कठताल।
'युगलप्रिया' रंग-रंग सरयू रंग महल झरोखे रंग-रंग जाल।।

पद-२२२

झूलत रसिक राम श्याम सुखधाम,
सियाजू रंगीली वाम झूलति उमंग में।
तैसी चन्द्रकला विमला कमला चन्द्रवतीजू,
चन्द्रा अनूप तान गान की प्रसंग में।।
आई पुरवासिनि विलासिनि सियाजू की,

विभव विलास देखि थकी छकी रंग में।
'युगल प्रिया' जाचे रसिकजनन संग साँचे,
पहिर समाचै राचै पाउँ निज अंग में।।

पद-२२३

अरुझे दोऊ बसो दृग ऐसे, पय बिच माखन जैसे।
नयनन नयन बैन बैनन मिलि सुमन सुगन्ध सु जैसे।।
अलि अलियाँ भलियाँ औसर लहि कलरव करति अभय से।
श्रीचन्द्रकला कल बीन बजावैं गान कला गावैं लय से।।
श्री युगलप्रिया सुमृदंग थाप दै जुरी समाज समय से।
श्री हेमलता श्री प्रीतलता मिलि प्रिय तमाल तरु वैसे।
बैठे सरयू निकुँज लाल ललि गलबहियाँ वर वैसे।
'श्रीयुगल विहारिणी' लखैं युगल छवि भखैं अकथ मुख कैसे।

पद २२४

अलि फूलन हिंडोरे झूलैं जनककिशोरी।
फूल के चौकी राजैं फूलन की डाँडी भ्राजैं फूलन की छतुरी सोहै फूल खांभे डोरी। फूलन के तकिया प्यारी फूलन बिछौना वारी पिय अंस भुजधारि राजत जोरी। फूलन सिंगार किये अलिगन लखि जिये गावति सरसराग प्रमुदित गोरी। विपिनि प्रमोद बागे फूलकुंज अनुरागै युगलप्रिया चकित लखि तृनतोरी।।

पद-२२५

ए दोऊ चन्दा बसो उर मेरे।
दशरथ सुत श्रीजनकनन्दिनी अरुण कमल करकमलिनि फेरे।

बैठे सघनकुंञ्ज सरयू तट आसपास ललनागन घेरे।।
ललित भुजा दिये अंस परसपर झुकि रहि केश कपोलनि नेरे।
चन्द्रवती शिर चँवर डोलावति चन्द्रकला तन हँसि-हँसि हेरे।।
'रामसखे' छवि कहि न परत जब पान पीक मुख झुकि-झुकि गेरे।

पद-२२६

देखि के अरुझानी जियरा।
राजकुमार श्यामसुन्दर वर हमहिं नहीं सबहन को हियरा।
बनप्रमोद बिच जनकलली सँग अली सकल जुरि आई नियरा।
'युगलप्रिया' यह छवि निरखन को हिय बिच बारो सुरतिको दियरा।

पद-२२७

बारि दीजै सुरति को दियरा।
प्रभा पाय दम्पति छवि सम्पति निरखि हरषि शीतल होइहैं हियरा।
विद्या प्रसव भक्ति प्रेमादिक होय न आवैं अविद्या नियरा।।
श्रीसरयूतट अघट रास रस होय विहार बहार सियपियरा।।
श्रीसद्गुरु महाराज प्रणत हिय यह कलिकाल विहालहिं कियरा।
लखिअनुगामी स्वामी निजबालक युगलविहारिणी करु हिय सियरा।

पद-२२८

सजन लागी आरती मृगनयनी।।
कंञ्चन थार कपूर की बाती गंध सुमन हर लैनी।
करहिं आरती छवि अवलोकहिं गान करैं पिक बैनी।।
चँवर छत्र शिर विजन ढुरावति सहचरियाँ सुख स्रेनी।
जल झारी सुचि पान डिबन भरि स्त्रग सुगंध सुख दैनी।
सुख सोवहु अब सैन समय भयो मृदु मुसकाय दई सैनी।

हरषि निरखि छवि पर तृण तोरति मौन सुधा रस ऐनी।।

पद-२२९

जय श्री जानकिवल्लभ लाल।
मणि मन्दिर श्री कनक भवन में विपुल रँगीली बाल।।
कोइ गावति कोई बीन बजावति कोई मृदंग करताल।
'युगलप्रिया' रिझवति दोउ लालन छवि लखि भई सुनिहाल।

पद-२३०

सुन्दर वदन विलोकि कै नयनन फल लीजै।
जानकि वल्लभलाल की सखि आरती कीजै।।
कुण्डल कलित कपोल पै छुटि अलक विराजै।
कण्ठा कण्ठ सुहावनी गजमुक्ता राजै।।
पाग बनी जड़ि तार की दुपटा जड़ि तारी।
पटुका है पचरंग की मणि जड़ित किनारी।।
सिय जू की तन चुनरी लसै जड़ि जोति किनारी।
'रसिकअली' की स्वामिनी अद्भुत छवि भारी।।

पद-२३१

सिया सियावल्लभलाल की सखी आरती करिये।
दम्पति छवि अवलोकि कै हिय नयनन धरिये।।
अंग अनूप सुहावनो पट भूषण राजैं।
नेह भरे दोऊ रसिक सुभग सिंहासन भ्राजैं।।
मन्द-मन्द मुसुकाय के सिय गलभुज धारी।
ललकि लई उर लाय प्राण प्रीतम निज प्यारी।।

रस ऐनी।।
ली बाल।।
करताल।
ई सुनिहाल।
लीजै।
कीजै।।
विराजै।
जै।।
तारी।
नारी।।
कनारी।
नारी।।
करिये।
रिये।।
राजैं।
राजैं।।
धारी।
नारी।।

ललनागन बड़ भागिनी लोचन फल पावै।
सेवहिं भाव बढ़ाय के नित नव गुण गावैं।।
चँवर छत्र कोउ लिये बाजने विपुल बजावैं।
'प्रेमलता' उर उमगि सुमन नचि-नचि बरसावैं।।

पद-२३२

अब हमारे प्राण प्रीतम प्यारे अलसाने लगे।
छिनहिं छिन अँगड़ाइयाँ लै-लै के जमुहाने लगे।।
चंचलाहट हट गई उत्पन्न भोरापन हुआ।
नींद से माते नयन नव कंज सकुचाने लगे।।
रैनहूँ बीती बहुत नभ मध्य उड़गन आ गये।
गीत राग विहाग सब गायक गुणी गाने लगे।।
दूसरी नौबत बजी घड़ियाल भी दीन्हों गजर।
पाहरू आये अपर पहरे को बदलाने लगे।।
लै चलो 'हरिजन' उठाकर प्यारे को सुखसेज पर।
सैन छवि निरखन को अब मम नयन ललचाने लगे।।

महल को चलिये श्री महाराज।
राजत राजत जिया अलसाने,
बीति गई बहु रात॥
नैना रसीले रंग भरे दोउ,
छिन-छिन झुकि-झुकि जात.
श्री अग्र अली जू के प्यारी प्रीतम,
गरबहियाँ लपटात॥

* झूला-झलक *

सावनी सुतीज मोद बीज 'रसरंगमणी'
मनीकूट कुंज बीज फूले तरु सावनी।
सावनी अवनि हरी सावनी सरयू भरी,
सावनी मधुर झरी मेघा बरसावनी।
सावनी सु सारी धारी भामिनी समूह गावैं,
सावनी सु राग नृत्य गति दरसावनी।
सावनी पोशाक रामस्वामिनी सँवरि झूलैं,
सावनी सु झूलन सनेह सरसावनी।।१।।
बाग वृक्ष बेली झूलैं संग की सहेली झूलैं,
सरयू तरंगन सौं झूलैं मोद मूलहीं।
तुर्रा अनमोल झूलैं कुण्डल सु लोल झूलैं,
अलक कपोल झूलैं दृग झूलि फूलहीं।
बेनी पीठ पर झूलैं बेसरि अधार झूलैं,
झुलनी सुघार झूलैं कर्णफूल डूलहीं।
सबहीं झुलाय झूलैं झूलन में सीताराम,
यों ही 'रसरंगमणी' नैनन में झूलहीं।।२।।
भ्राजैं चहुँओरे नभ गाजैं घनघोरे तोय,
त्याजै थोरे-थोरे बोलें मंजु मोरी मोरे हैं।
सरयू हिलोरें जहाँ लेहिं चित चोरे तहाँ,
युगल किशोरे लसैं श्यामल सु गोरे हैं।।
यंत्रान टँकोरे सखीं नाचैं अंग मोरे,

'रसरंगमणि' जोर जस गावैं ताल तोरे हैं।
मैन छवि छोरे हँसें हेरि नैन कोरे,
सीताराम रस बोरे आज झूलत हिंडोरे हैं।।३।।
रचे चारु चामीरुर दण्डन के दोनों ओर
चन्द्रकला चारुशीला चँवर चलावतीं।
विमला व्यजन वीजैं छेमा छपानाथ ऐसी,
सीता रघुनाथ माथ छत्र छटा छावतीं।।
सहजादि सखी साज लीन्हें 'रसरंगमणी'
सुभगा सुभग राग सावन की गावतीं।
झुकि-झुकि झमकि-झमकि झोंकि झोंकन सों,
अली लली लालन को झूलन झुलावतीं।।४।।
गावत हैं वेद चारि ब्रह्मा त्रिपुरारी जाके,
नारद शारद शेष पार नहीं पावहीं।
करहिं विविध जप तप योग योगीजन
संयम समाधि करि-करि जेहि ध्यावहीं।।
जाकी अनुशासन विरचि जग माया यह,
डहकि-डहकि आग जगहिं भुलावहीं।
सोई प्यारे जानकी मनोहर सहित सिय,
झूलत नवलकुंज सखिन झुलावहीं।।५।।
सबुज रंग फर्स छत चँदोवा हैं सबुज रंग,
सबुज रंग भीति वापै सबुज चित्रकारी हैं।
सबुज रंग आसन सिंहासन है सबुज रंग,

सबुज है हिंडोला ता पै सबुज पिय प्यारी हैं।
सबुज रंग भूषण औ वसन है सबुज रंग,
सबुज सब साज लये बनी छवि भारी हैं।
झुलावैं दुइ सबुज सखी गावैं सब सबुज राग,
झूलैं सबुज रघुवर संग जनकदुलारी हैं।।६।।
हरे-हरे चन्द्रिका किरीट उभय शीश सोहैं,
हरे-हरे मणिन के माल गरे परे हैं।
हरी-हरी सारी जड़तारी त्यों किनारी लाल,
लालहूँ वसन तन हरे-हरे धरे हैं।।
हरे-हरे रंग उघारे हैं गौर श्याम मिले,
हेरि 'रसरंगमणि' शोभा मोद भरे हैं।
हरे-हरे झूलन पै लसैं हँसैं हरे-हरे,
झूलैं सिया राघव बिहारी हरे-हरे हैं।।७।।
नई है नवेली लाल नवल पावस शोभा,
नवल लतान कुँज अतिहिं सोहाई है।
नये हैं सरयू कूल पहिरे तन नये दुकूल,
नये फूले फूल शोभा सोमवट छाई है।।
नवल कोकिला सोर मारुत की नई झकोर,
चहूँओर बोले मोर नई अमराई है।
नवल हिंडोर कुंज नये भ्रमर पुंज-गुंज,
नवल रंगीले लाल प्यारी को झुलाई है।।८।।
श्यामा-श्याम झूलत हिंडोरा पर्‍यो कुंजन में,

पावस
श्याम
इन्द्रध
सखिय
जुगनू
झूलत
चपला
श्याम
श्याम
श्याम
श्याम
चाँदनी
श्याम-
श्याम
राम अ
सावन
फूले
बिजुरी
लाल-ल
कंचन
चन्दन
लाल

पावस समान छटा सोहैं प्राण प्यारे की।
श्याम घनश्याम सोहैं श्यामा चन्द्रमुखी सोहैं,
इन्द्रधनु चाप आभा विशिख तरारे की।।
सखियाँ झुलावैं खड़ी इन्द्र की वधूटी मानो,
जुगनू चमंकैं टँके सलमा सितारे की।
झूलत वितान से ते निकसि चमकि जात,
चपला अनोखी छटा पीत पटवारे की।।९।।
श्याम कच श्यामचोटी श्याम भाल विंदु दिये,
श्याम दृग श्याम-श्याम काजर लगाये हैं।
श्याम तन सारी श्याम-श्याम है किनारी तामें,
श्याम जड़तारी बेली बूटहू सजाये हैं।
चाँदनी तनी है श्याम फरश बिछी है श्याम,
श्याम-श्याम झालर श्याम लट्टू लटकाये हैं।
श्याम ही तमाल डाल झूलन रसाल श्याम,
राम अभिराम सिया श्यामा को झुलाये हैं।।१०।।
सावन अब आये लाल लीन्हें सब साज लाल,
फूले बन बाग लाल-लाल रंग मेह की।
बिजुरी की चमक लाल बोले बनमोर लाल,
लाल-लाल दादुर लाल-लाल रंग गेह की।।
कंचन को खम्भ लाल रेशम की डोर लाल,
चन्दन कपाट लाल-लाल रंग जेह की।
लाल शिर पेंच लाल लली की चन्द्रिका लाल,

झूले दशरथ के लाल लाड़िली विदेह की।।११।।
लाल हैं लड़ैती लाल संग लिये सखी लाल,
झूलत हिंडोर लाल-लाल घन गाज री।
चन्द्रिका किरीट लाल जामा औ पटुका लाल,
चून्दरी कंचुकी लाल-लाल सब साज री।।
बाजत मृदंग लाल ढोलक सितार लाल,
ताल मुरचंग लाल-लाल बीन बाँसुरी।
लाल की ललाई लाल देखिके मदन लाल,
ठाढ़े पछतात लाल लेत हैं उसाँस री।।१२।।
लाल-लाल फूल फूले ललित प्रमोदवन,
बनि ठनि संग सोहैं लाल-लाल बाल हैं।
लाल सिया सारी लाल वसन बिहारी तन,
चन्द्रिका किरीट लाल-लाल उर माल हैं।
लाल-लाल झूलन में सरयू के कूलन में,
हूले 'रसरंगमणी' झूलैं लली लाल हैं।।१३।।
चहुँओर ललित हिंडोरे लाल बालहू के,
राजै मध्य रंग भीने श्यामा-श्याम लाल हैं।
चुँदरी सुरंग लाल प्यारी अंग-अंग लाल,
भूषण विचित्र लाल संग-रंग लाल हैं।।
मन्द-मन्द हँसानि हिंडोर रंग झूलने में,
लाल बाल हेरनि सौं करत निहाल हैं।
लटपटि पाग लाल समर उमंग लाल,

लालमई बाल कैधों बालमई लाल हैं।।१४।।
आली पिक कोकिला कलापि किलकारें सोर,
सोरैं नभमाली आली काम जोर जंग में।
अंग मुख लाली लाल वसन कुसुम्भि लाल,
नवल्ल किशोरी लाल-लाल बाल संग में।।
छूटैं पेंच लाली पाग चुन्दरी किशोरीजू की,
अति सुख लाली खिली अमित अनंग में।
रूप गुण यौवन कला की कण्ठ ताली संग,
सावन निकुंज झूलैं प्यारी लाल संग में।।१५।।
लाली अति सावनी सोहावनी सुरंग फूल,
कल्पतरु कदम्ब मूल केतकी रसाल हैं।।
लालन के लाल बाग बेदिका विचित्र लाल,
अतिहिं विसाल तामें झूला पर्‌यो लाल हैं।
लालहीं वितान फर्स झूलामणि रचि लाल,
लाल बालमध्य झूलैं सिया रघुलाल हैं।।१६।।
फूलन के खम्भा पाट पटरी सुफूलन की,
फूलन के पुंदने पुंदे हैं लाल डोरे में।
कहैं 'पद्माकर' वितान तने फूलन के,
फूलन के झालर से झूलत झकोरे में।।
फूल रही फूल फूलवारी तहँ फूल के ही,
फरस बिछे हैं फूल-फूल कुञ्ज खोरे में।
फूल झरी फूल भरी फूल जरी फूलन में,

फूल ही सी फूलि रही फूल के हिंडोरे में।।१७।।
चतुर चपल चौपि चारु चाह चढ़ैं चित्त,
चौगुन चलाक चञ्चरीक चित चोरे में।
छिन-छिन छमकि-छमकि छिति छैल छाये,
छोहरी छबीली छए छैल छवि छोरे में।।
जौवन जुलूस जोरा-जोर जामिनी जगत,
जौहर जवाहर जुगल जाल जोरे में।
झमकि-झमकि झुक झोंकन सो झाँकि-झाँकि,
झुकि-झुकि झाँकी झूलैं नयन के हिंडोरे में।।१८।।
होली में हराया सखियों ने रामलाल जू को,
हार भी लिखाया वह दृश्य नहिं भूला है।
सावन सुहावन मनभावन दरशाया साथ,
बदला चुकाने का समय भी अनुकूला है।।
घन घमण्ड छाया बनप्रमोद ने लुभाया हीय,
विद्युत छटा को लखि 'विजय' मनफूला है।
वीणा को बजावो गावो सुखद हिंडोर राग,
प्यारी को झुलावो आज सरयूकूल झूला है।।१९।।

नवल
हिंडोल
ध्वज क
जनु अरु
चहुँ फेर
बोलत
सारो सु
वेदी ल
मूरति म
फूले कु
गुञ्जत
सीरी सु
परसत अ
तहँ भूमि
बूटे वि
ता मध्य
सोपान
कासार
बूटे वि
ऐना अ

आन्दोल-रहस्य-दीपिका

राग मलार

नवल हिंडोलना आलि झूलत लाड़िली लाल।
हिंडोल साल विचित्र कंचन कोट जगमग जोत।।
ध्वज कलस विद्रुम कँगूरनि पर ललित उपमा होत।
जनु अरुण महिधर सिखर बैठे निकर खगपति गोत।।
चहुँ फेर ललित द्रुमावली फल पत्र कुसुम सजोत।।१।।
बोलत विहंग अनेक मृदुरव कोक कोकी मोर।
सारो सुवा पिक चाख चातक ललित लाल चकोर।।
वेदी ललित द्रुम द्रुमनि प्रति सम सतर शोभा साज।
मूरति मनोहर ताख रचना साख शोभा भ्राज।।२।।
फूले कुसुम द्रुम विविध रंग सुगन्ध के चहचाव।
गुञ्जत मधुप मधुमत्त नाना रंग अज फँग फाव।।
सीरी सुगन्ध सुमन्द वात विनोद कन्द बहन्त।
परसत अनंग उद्योत हिय अभिलाष कामिनि कन्त।।३।।
तहँ भूमि कंचनमय मनोहर जटित नग पचरंग।
बूटे विविध बेली विचित्र सुजाल जोति पतंग।।
ता मध्य सुभग तड़ाग हाटक रचित घाट सुचार।
सोपान सुन्दर प्रतिमा जनु रची निजकर मार।।४।।
कासार बिच इक बंगला मणि फटिक रचित बिशाल।
बूटे विविध विद्रुम खचित रचि ललित कंचन जाल।।
ऐना अनूप सरूप युत कल काम कौतुक केलि।

शत अष्टद्वार विचित्र रचना खचित खंभ सुवेलि।।५।।
तहँ विविध वसन वितान झालर जरकसी नगदार।
गजमुक्ति विद्रुम फुन्द मरकत कलित कंचनतार।।
कहुँ हरित हाटक चित्र छत्र विनीत विनहिं विशेख।
कहुँ अरुन मणिमय चित्र मरकत जाल कंचन रेख।।६।।
सुखमा समाज अपार बरनत पार पावत कौन।
लखि शेष शारद शम्भु विधि कवि ह्वै रहे यों मौन।।
तहँ बिछे बिस्तर पाटमय गिलमै गलीचा चारु।
ढिग चित्र कंचन तार मनि मनु सजित सयनी मारु।।७।।
तहँ मध्य खण्ड अनूप रचना वेदिका मनि चित्र।
जगमग सुजोति विराज मानों उदय बहु शशि मित्र।।
तापर विचित्र हिंडोलना सियलाल झूलैं रंग।
गावैं अलीगन मधुर स्वर बाजैं मृदंग उपंग।।८।।
युगखंभ पुष्ट सुउच्च कंचन सदन रचना सोह।
नृत्यत कनककल कामिनी जेहि निरखि रति मन मोह।।
मरुवा मयारीं सिखर कलस कँगूर जाल अनूप।
भौंरा सुभोंरी भृङ्ग कृत्रिम विहँग गण बहु रूप।।९।।
डाँड़ी सुढारु सुचारु चार विचित्र चित्रित जाल।
झूमक झलामल जोति पुंज सुमंज मुक्ता लाल।।
चहुँ कोर नृत्तक मोर मुनियाँ फुन्द रचित मुकेश।
कलसूत्र रचित विहंग विहरत खचित अंग सुदेश।।१०।।
लघु-लघु ललित द्रुम मनि रचित चहुँपास धरे विचित्र।

फलपत्र कुसुम समांग सोभित निरखि विधि हिय चित्र।।
युगपाँति कृत्रिम ललित ललना करन कंचन दण्ड।
युगपाँति कृत्रिम इभ अनूप विसाल सुण्डा दण्ड।।११।।
यहि भाँति रचना अमित कौतुक रंग झूलन साल।
तहँ अमित अलिगन संग आये जानकी रघुलाल।।
सखि प्रथम मंगल गान करि धरि कुम्भ मंगलरूप।।
चौकें सुगज मनिमय रचे धरि दीपमाल अनूप।।१२।।
मनिमय जवांकुर पात्र धरि रोपे सु कदली खंभ।
दधि रोचना दूर्वांक कुमकुम जलज माल सुअंभ।।
तहँ प्रथम गौरि गणेश पूजे पुनि अनंग पुजाय।
रसरीति अलि गावन लगीं बाजे सुविविध बजाय।।१३।।
तब विहँसि अलि आंदोलिका बोली ललित मृदु बैन।
अब झूलिये रस दम्पती इक संग रंजित मैन।।
परि नेग हमरो दीजिये नृपनन्दिनी सुखदानि।
ल्यौ नाम पिय को नागरी सुनि लाड़िली सुकुचानि।।१४।।
जनि लाज कीजै लाड़िली दीजे हमारो भाग।
पिय भावते को नाम लीजै अचल भाग सोहाग।।
ये विदित तिरिया वेद जानो ले पिया को नाम।
पुनि झूलिये पिय जीवनी जग रीति या अनुपाम।।१५।।
तब बिप्र रूप बनाइ आई सखी निपुण सुचार।
पिय प्यारि चढ्यो आन्दोलना पढ़ि सांति मंगलचार।।
इक संग बाजे बाजने बहु मदन भेरी ढोल।

स्वर मिलित झिलित विनोद चहुँदिशि गावतीं अलिगोल।।१६।।
इत घुमड़ घन नभ उमड़ि छाये दामिनी दरसाय।
बरसत झमाझम बुन्द बड़ि-बड़ि पवन त्यों सरसाय।।
तहँ कोकिला गावत नटत केकी मृदँग घनघोर।
झींगुर मनो मंजीर रव चातक चुटुकि रसबोर।।१७।।
बाढ्यो अधिक रस झूलना सखि छकीं रब रसरूप।
खसि वसन कंचुकि कसन छूटत टुटत हार अनूप।।
सो मुक्तमणि विस्तरन पर कोमल चरण चुभि जाय।
भय मानि ले सब दासिका जल माँझ देत बहाय।।१८।।
झुकि-झुलनि में रसहुलनि में दरसै परसपर रंग।
प्यारो झुकनि मिस भी परस परसत नवेली अंग।
तब लाड़िली बस लाज पिय को अरज करि दृग सैन।
सो लखत नहिं नागर नवल सरसानि रस उर ऐन।।१९।।
तहँ उभय ससि षट रवि उभय गुरु दामिनी घन माँह।
उड़गन सहित विलसत परसपर छटा परसत छाँह।।
अलकैं विथुरि राजत वदन पर सोह श्रम जल बिन्दु।
जनु प्रगट अमि लखि उरग बहु अनि घेर लीनो इन्दु।।२०।।
प्रीतम प्रिया मुख श्रम सलिल कन पोंछि हित सुख लेत।
जनु नागराज सुइंदु अरचत सुधा साधन हेत।।
जब लाड़िली कटि लचकि मचकति झुकति पिय की ओर।
तब जात बलि-बलि लाड़िली गति होत चंद चकोर।।२१।।
जब परसि वात उरोज अंचल उड़त सिय सकुचाय।

गोल।१६।।
ो दरसाय।
सरसाय।।
घनघोर।
र।।१७।।
रससरूप।
र अनूप।।
भि जाय।
य।।१८।।
पर रंग।
ली अंग।
दृग सैन।
न।।१९।।
घन माँह।
त छाँह।।
ल बिन्दु।
दु।।२०।।
ुख लेत।
न हेत।।
की ओर।
र।।२१।।
कुचाय।

पुनि हेरि पिय तन नमित चख रहि रसन दसन दबाय।।
लखि हाव पिय उर भाव सरसत चाव चित उमगात।
सो निरखि दम्पति सुख सरस अलि मुदित उमगी गात।।२२।।
इक नई रीति निहारि बाढ्यो अलिन उर आनन्द।
दृगकंज प्रफुलित लाल के निरखत सिया मुखचन्द।।
प्यारी बदन जलजात छवि मकरन्द अलि पिय नैन।
रस पान करत न टरत छिन छाये छके दिन रैन।।२३।।
हिय हार उरझे दुहुँन के त्यौं अली झोंका देत।
सुरझे न झोंकनि झपटि लपटी नवल पिय रस लेत।।
लखि श्रमित सम झूलनि पिया प्यारी लई भरि अंक।
ले गोद पिय झूलन लगे लखि छके बदन मयंक।।२४।।
सनमुख सरस झूलन लगे अलि झमकि झोंका देत।
प्यारी पिया उर कण्ठ लिपटी अली सो रस लेत।।
इक अली युग पट ग्रन्थि दे सिर मौर मौरि धराइ।
तब ब्याह गावन लगी ललना मोद हिय सरसाइ।।२५।।
आन्दोल केलि निकुंज यहि विधि झूलि सिय रघुलाल।
पुनि चित्र वन मन मुदित गवने रूपनिधि सुखजाल।।
कोटिन अलीगन संग शोभित रुप गुन की मूरि।
जिनको निरखि रति मार लाजत अपर उपमा कूरि।।२६।।
नुपूर ठुमुकि किंकिणि रमक भूषण झमक धुन छाइ।
रही सुरंग मचाइ मुनि मन छोभ कीनो जाइ।।
वादित्र धुनि कछु गान धुनि रहि महि अही स्वर पूरि।

सिंगार रस उमड्यो अधिक लखि पिया मन चखचूरि।।२७
जब मध्य वन पहुँचे सिया पिय उमड़ि घन झरि लाइ।
चमकन लगी चपला चहूँ दिशि मोर शोर सुनाइ।।
भीजे अलिन के चोल चूँदरि चुवन लागे रंग।
झीने सुपट लागे लिपट दरसाइ त्यों अलि अंग।।२८।।
लखि लाल तन उर लाज छाई पिया त्यों रस छाइ।
करि गान अति रस तान भरि-भरि अलिन मन उरझाइ।।
मृगी ज्यों सब ठगी नागरि रहि विरह तन घेरि।
मिलन चाहति लाल अंक निसंक हारीं हेरि।।२९।।
छाई निशा सी छाँह घन की निविड़ बन की ओट।
कैसे मिलैं सियलाल अलि सब ग्रसी चिन्ता कोट।।
द्रुम द्रुमनि प्रति ढूँढ़त फिरैं मन हरै मूरति श्याम।
टेरैं परसपर मिलै जब कोउ विरह बेधी बाम।।३०।।
परि प्रीति लखि सबको मिले भइ नवल पूरन काम।
कहती चतुर चूड़ामनी तुम राम हौ सुख धाम।।
इक कल्पद्रुम तर प्रिया प्रीतम नहिं सखी कोउ अंक।
घन गरज डरपत लाडिली पिय गोइ उर धन रंक।।३१।।
घन गये बरसी सरसि आली परसि प्यारी लाल।
तब चित्रवन नवकुंज पहुँचे सजे नव पट माल।।
तहँ अली करि आरति निछावरि भोग भरि मनिथार।
अति प्रीति मधु भोजन कराये रचे नव सिंगार।।३२।।
पुनि लै गई आंदोल कच्छ सुस्वच्छ मनि बहु धाम।

बहु रंग चि
कल कलित
नव पुत्रिका
इक लक्ष दल
सब सखिन
तब मदन
चमकै चमाच
नाचैं अली
सम धुनि सुने
यहि भाँति
सिंगार सैल
जहँ झरत
आकर अमित
कोउ श्याम अँ
कोउ चित्र चा
तहँ मोर बो
पहुँचो तहाँ
सिंगार अलि
नव वसन भू
अधि भू ल
तहँ विविध
तहँ बेदिका

बहु रंग चित्र हिंडोलना झूमक झलक मनिदाम।।
कल कलित वलित विहंग भौंरा चलित कम बल डोरि।
नव पुत्रिका कंचन मई गावैं नचैं अंग मोरि।।३३।।
इक लक्ष दल मनि कंज मंजुल प्रति दलन अन्दोल।
सब सखिन युत झूलन लगे सियलाल मन रस लोल।।
तब मदन भेरि मृदंग बाजे इत सघन घन घोर।
चमकै चमाचम चंचला चक मोर-मोरनि सोर।।३४।।
नाचैं अलीगन तान मान मृदंग पद करताल।
सम धुनि सुने मुनि ध्यान बिसरै अति मगन मन लाल।।
यहि भाँति झूले कला कोटिन रुख प्रिया की जान।
सिंगार सैल उदार शोभा चले जानकि जान।।३५।।
जहँ झरत झरना तरल वरना श्रृंग शोभा धाम।
आकर अमित मनि रंग बहु बिहरत अमित मृग दाम।।
कोउ श्याम अँग कोउ श्वेत अँग कोउ कनक वरण विशेष।
कोउ चित्र चारु विचित्र मरकत रचित कंचन रेख।।३६।।
तहँ मोर बोलत अतन खोलत मरुत डोलत रंग।
पहुँचे तहाँ रसरंग भीजे लाल सिय अलि संग।।
सिंगार अलि करि आरती भोजन मधुर करवाइ।
नव वसन भूषण सुचि सुगन्ध अनूप रुप अघाइ।।३७।।
अधि भू ललित भूषित परम रमनीय द्रुम चहुँ ओर।
तहँ विविध रंग वितान झालर बटी पट पचमोर।।
तहँ बेदिका विद्रुम रचित मरकत खचित गजकोर।

कल सूत्र चालित सुँड मंडित कनक सिखरी मोर।।३८।।
तापर सुभग अन्दोल खचित अमोल मनि बहु रंग।
झूलैं झुलावैं परसपर सिय लाल ललना संग।।
बाद्यों अधिक रस छकी नवला प्रबल तहँ प्रति ध्यान।
मृग घिर आये झुंड-झँडनि चकित दीन्हें कान।।३९।।
इत देर जानी अवध रानी मनहिं चिंता मान।
अवधेशजू ढिग पठय नाजर साजि सैना जान।।
सँग सखा लषन समेत गज चढ़ि चले सौज बनाइ।
दल बीच राखि सुजान लछिमनलाल पहुँचे जाइ।।४०।।
मरजी मँगाई गये भीतर करि बजाइ जुहार।
इक अली कर गही लगि झुलावन को सुनै समाचार।।
रघुवीर निकट बोलाइ बूझी कह्यो मातु संदेश।
फेरे लषन को दल रह्यो सब कह्यो मातु संदेश।।४१।।
पुनि मातु विविध मिठाइ मेवा मुगद बहु पकवान।
सनि सुगंध अनेक विधि भारक पठाये जान।।
सो रजनि शैल विहार बीती भवन भोर प्रवेश।
कियो सिय रघुनन्द जननी दान दिये धनदेश।।४२।।
यह ललित लीला लाल सिय की त्रिगुन माया पार।
पुरुष तहँ पहुँचे नहीं केवल अली अधिकार।।
'रसिकअली' जीवन यही ध्यावै रटै दिन रैन।
बिनु जुगल रस लीला लखे छिन पल हिये किमि चैन।।४३।।

।। इति श्रीरसिकअली कृत "आंदोलरहस्यदीपिका" समाप्त ।।

आचार्यपीठ श्रीलक्ष्मणकिला

मन्दिर-परिक्रमा

बोलो सीताराम सीताराम राघोराम,
मेरो मन बसि गयो सीताराम।
गौर बरन श्री जनकनन्दिनी,
रघुवर हैं घन सुन्दर श्याम।।
विश्वामित्र को यज्ञ सुफल कियो,
गौतम नारि पठाया पति धाम।
जाइ जनकपुर धनुष उठायो,
सब भूपन को तोर्‌यो मान।।
सरयूतीर अयोध्या नगरी,
जहँ विहरैं सिय लछिमन राम।
जटा मुकुट मुनि वेष धर्‌यो है,
कठिन धनुष लियो सारंगपानि।।
दशरथपुत्र अयोध्यानायक,
तापर चँवर ढुरावें हनुमान।
अजामिल गज गणिका तार्‌यो,
अधम से अधम दियो निज धाम।।
तुम जनि बिसरि जाहु मोरे मन ते,
तुम बिन निकरि जात मेरो प्रान।
'आसानन्द' कहै कर जोरे,
चौंसठ घरि भजु आठों याम।।

श्रीलक्ष्मणकिलाधीश जी द्वारा लिखित
एवं
प्रकाशित पुस्तकों की सूची

श्रीनाम कान्ति	20.00
श्रीधाम कान्ति	10.00
गुरु वन्दना	10.00
रघुवर गुरु दर्पण	10.00
श्री वाल्मीकि रामायण तात्पर्य निर्णय	20.00
श्री जन्मोत्सव बधाई पदावली	25.00
श्री वसन्त विहार पदावली	20.00
प्रवचन-पीयूष	30.00
श्रीमद् वाल्मीकि रामायण मीमांसा	100.00
स्मृतिमाला	200.00
संस्मृति विशेषांक	20.00
श्रीरामजन्मभूमि विशेषांक	30.00
गोपी गीत	20.00

प्रकाशनाधीन

श्री सीतातत्त्व मीमांसा
भ्रमर गीत
श्री मैथिली विवाह पदावली
अजामिलोपाख्यान
श्री हनुमदुपदेश
श्री वैष्णव दर्शन
रसिक प्रकाश भक्तमाल
गीता तात्पर्य निर्णय

प्रकाशक :
श्री सीताराम सन्देश कार्यालय
श्री लक्ष्मण किला, श्री अयोध्यांजी 224 123
फैजाबाद (उत्तर प्रदेश), मो. 9415062831